नया वर्ष नए सपनों, नई उड़ानों, नए संघर्षों के नाम

31 दिसम्बर, करावलनगर; दिल्ली। नववर्ष की पूर्वसंध्या पर दिल्ली के करावलनगर इलाके में 'नौजवान भारत सभा' ने एक सांस्कृतिक कार्यक्रम के माध्यम से अपना सन्देश वहाँ के बाशिन्दों तक पहुँचाया। इस सांस्कृतिक संध्या को नाम दिया गया था–'नया वर्ष नए सपनों, नई उड़ानों, नए संघर्षों के नाम।'

एक क्रान्तिकारी गीत के बाद कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए **करावलनगर नौजवान भारत सभा** के संयोजक **कपिल स्वामी** ने नौजवान दिलों का आह्वान किया कि वे इस साल ज़िन्दगी के फराने ढर्रे को छोड़कर समाज को बदलने की राह चुनें और सही मायनों में जनता का राज लाने और भगत सिंह के सपनों को साकार करने के लिए अपना जीवन दें। इसके बाद नौजवान भारत सभा के सांस्कृतिक दस्ते ने 'आ गए यहाँ जवाँ कदम' नामक **गीत** प्रस्तुत किया। दो नाटक भी पेश किए गए। पहला था **'सरकारी साँड़'** और दूसरा था **असगर वजाहत** द्वारा लिखित **'देश को आगे बढ़ाओ'**। इन दोनों नाटकों में चुनावबाज नेताओं की कारस्तानियों और जनविरोधी हरकतों को दिखलाया गया था। 'सरकारी साँड़' में भ्रष्ट नेता की सीनाजोरी और ढोंग और फिर जनता द्वारा उसके खदेड़े जाने को देखकर दर्शकों की भीड़ को खूब आनन्द आया। 'देश को आगे बढ़ाओ' में दिखाया गया कि कैसे नेता देश के विकास के नाम पर अपना विकास करते हैं। इस नाटक को भी काफी पसन्द किया गया।

अन्य सांगीतिक प्रस्तुतियों में **'ऐ इंसानों ओस न चाटो'**, **'शहीदों का गीत'**, भोजपुरी गीत **'बड़ी-बड़ी कोठिया सजाए पूंजीपतिया'**, और बंगाली गीत **'बीस्तीर्णो दुपारेर'** जैसे गीत शामिल थे।

नौजवान भारत सभा के **अभिनव** ने अपने वक्तव्य में कहा कि जनता का रास्ता इलेक्शन नहीं इन्कलाब है। अभिनव ने जोर दिया कि थैलीशाहों के पूँजी के राज को उखाड़ फेंकना और मेहनतकश के लोकस्वराज्य को स्थापित करना आज छात्र-युवा आन्दोलन का प्रमुख कार्यभार है। उन्होंने इस बात की ओर भी ध्यान दिलाया कि भ्रष्टाचार का मामला ऐसा है जिसमें सारे चुनावबाज नंगे हैं और एक-दूसरे को 'नंगा-नंगा' कह रहे हैं, जैसा कि जोगी-जूदेव मामले में देखने को मिलता है।

अंत में दर्शकों की माँग पर 'सरकारी सांड़' का मंचन दोबारा किया गया। फिर कपिल ने समापन वक्तव्य रखते हुए कहा कि नौजवान भारत सभा की अगामी योजनाओं में शहीद भगत सिंह **पुस्तकालय खोलना, सुधार कार्रवाइयाँ करना,** शहादत दिवस मनाना आदि शामिल है और इन सारे कामों के लिए आम लोगों का सहयोग आवश्यक है। नौजवान भारत सभा के इस नारे के साथ उन्होंने बात समाप्त की–

नौजवान भारत सभा का है संकल्प
खड़ा करेंगे क्रान्तिकारी विकल्प।।

–कपिल

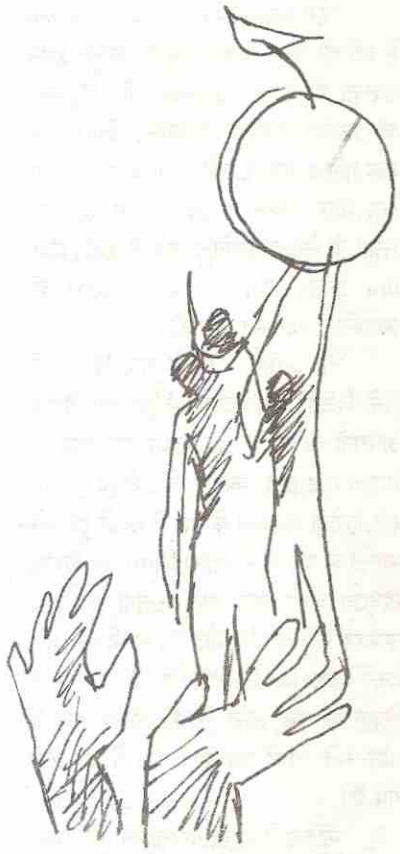

हरियाणा और उत्तर प्रदेश में व्यापक पैमाने पर लोक स्वराज्य अभियान

हरियाणा में सोनीपत, पानीपत, करनाल, रोहतक, कुरुक्षेत्रा, और उत्तर प्रदेश में **गोरखफर, देवरिया, बस्ती, बनारस, लखनऊ, बाराबंकी, कानफर, इलाहाबाद** और आस-पास के इलाकों में दिसम्बर और जनवरी में घनीभूत रूप से लोकस्वराज्य अभियान चलाया गया। लोकस्वराज्य अभियान कई जनसंगठन मिलकर चला रहे हैं। इनमें छात्रों, युवाओं, मज़दूरों, निम्न किसानों, महिलाओं, और जनपक्षधर बुद्धिजीवियों के संगठन शामिल हैं। लोक स्वराज्य अभियान के दस्तों ने ट्रेन के डिब्बों में, चौराहों पर, घर-घर जाकर, और प्रभात-फेरियां निकालकर अपना संदेश लोगों तक पहुँचाया और पर्चे बाँटे। लोकस्वराज्य अभियान के प्रवक्ता ने बताया कि इस अभियान का लक्ष्य है इस देश से धनपतियों के राज को उखाड़ फेंका जाये और जनता के लोकस्वराज्य को स्थापित किया जाए। लोकस्वराज्य से तात्पर्य एक ऐसी व्यवस्था से है जिसमें राज-काज और उत्पादन के पूरे ढाँचे पर उत्पादन करने वाले आम वर्गों का हक होगा और निर्णय लेने की ताकत उनके हाथों में होगी। लोक स्वराज्य दस्ते का नारा था–

खतम करो पूँजी का राज
लड़ो बनाओ लोकस्वराज

जनता के बीच अभियान का व्यापक पैमाने पर स्वागत हुआ। लोगों ने अभियान को काफी सहयोग किया। ट्रेन अभियान में मिलने वाले यात्रियों ने अपने शहर में आने का आग्रह किया। कुछ नागरिकों ने कहा कि आज के युवाओं से उन्हें यही उम्मीद थी। यदि इस देश के युवा आगे आएंगे तो इस देश को अन्धेरे से उजाले में लाया जा सकता है। लोक स्वराज्य अभियान के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुए।

दिल्ली विश्वविद्यालय में दिशा छात्र संगठन द्वारा व्याख्यान का आयोजन

स्त्री-अधिकारों और अस्मिता पर बढ़ते हमलों के कारण मानवद्रोही व्यवस्था में निहित

-अरविन्द जैन

"इस समाज और व्यवस्था की सीमाओं में स्त्री की मुक्ति सम्भव नहीं है। कानून इसमें अशक्त ही रहेगा। राजसत्ता और पितृसत्ता का अपवित्र गँठजोड़ भी कायम रहेगा।" यब बात प्रसिद्ध वकील, स्त्री प्रश्नों के गम्भीर अध येता और चर्चित फस्तक 'औरत होने की सजा' के लेखक अरविन्द जैन ने कही। दिशा छात्र संगठन द्वारा 21 नवम्बर, 2003 को आयोजित व्याख्यान में कही।

श्री अरविन्द जैन ने कहा कि पिछले दिनों दिल्ली विश्वविद्यालय में हुए स्त्री-विरोधी अपराधों को समाज से काटकर नहीं देखा जा सकता। उन्होंने कानून में मौजूद तमाम स्त्री-विरोधी प्रावधानों के बारे में बताते हुए ऐसे मामलों के बारे में भी बताया जिसमें स्त्री-विरोधी अपराध करने वाले ढीले कानूनों का लाभ उठाकर कैसे बच निकलते हैं। श्री जैन ने जोर देकर कहा कि उत्तराधिकार के कानूनों में स्त्रियों के प्रति स्पष्ट भेदभाव बरता गया है और सारे फायदे फरुषों के पक्ष में कर दिये गये हैं।

मीडिया में बढ़ती नग्नता की ओर ध्यान खींचते हुए उन्होंने कहा कि स्त्री-विरोधी अपराधों के बढ़ने के पीछे यौन-कुण्ठित समाज का भी बहुत बड़ा हाथ होता है। गौरतलब है कि समूचे इलेक्ट्रानिक मीडिया के 90 फीसदी पर उस रुपर्ट मर्डक का कब्जा है जो पहले ब्रिटेन में पोर्नोग्राफिक पत्रिकाएँ छापता था।

लेकिन इस बढ़ती नग्नता से पितृसत्ता के लिए भी एक संकट पैदा हुआ है। अरविन्द जी ने बताया कि पितृसत्ता और पूँजीवाद के बीच एक गठजोड़ है। पितृसत्ता को अपने उत्पाद के प्रचार और बिक्री के लिए तो 'बोल्ड एण्ड ब्यूटीफुल' लड़कियाँ चाहिये लेकिन अपने घर में पारम्परिक भारतीय नारी। मगर वह 'बोल्ड एण्ड ब्यूटीफुल' लड़की का आदर्श तो उसके घर में भी टेलीविजन के माध्यम से आ रहा है और उसके घर की लड़की की तमन्ना भी वैसा ही 'बोल्ड एण्ड ब्यूटीफुल' बनने की हो रही है। यह एक दुष्चक्र है जिसमें पितृसत्ता का रथ फँस गया है।

अंत में श्री अरविन्द जैन ने नौजवानों से कहा कि उनका पूरा अस्तित्व मेहनतकश आबादी का कर्जदार है। उनकी शिक्षा में लगा 95 फीसदी पैसा मेहनतकशों का है। उनकी सारी जरूरतें भी यही वर्ग पूरा करता है तो क्या यह अनुचित नहीं है कि छात्र आज के समय में सिर्फ अपना कैरियर बनाने में जुटे रहें? श्री जैन ने कहा कि आज समाज बड़ी उम्मीदों के साथ युवाओं को देख रहा है और युवाओं को व्यवस्था को बदलने का काम अपने हाथों में लेना होगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहीं कवयित्री सामाजिक कार्यकर्त्ता कात्यायनी ने तमाम छात्राओं से कहा कि अपनी मुक्ति की लड़ाई उन्हें खुद लड़नी होगी और हिम्मत करके आगे आना होगा। उन्होंने कहा कि स्त्री मुक्ति आन्दोलन हो या दलित मुक्ति आन्दोलन या किसी भी दबायी गयी कौम का आन्दोलन, इन सबका कोई भी भविष्य मेहनतकशों की मुक्ति के आन्दोलन से जुड़कर ही है। अलग-अलग रहकर ये आन्दोलन किसी भी मुकाम पर नहीं पहुँचेंगे। उन्होंने सभी छात्रों का आह्वान किया कि वे अन्याय के विरुद्ध विद्रोह करना सीखें और विद्रोह से क्रान्ति की ओर आगे बढ़ना सीखें।

कार्यक्रम का संचालन कर रहे **'दिशा'** के संयोजक **अभिनव** ने कहा कि स्त्री अधिकारों पर बढ़ते हमलों से सरोकार सिर्फ स्त्रियों का ही नहीं है बल्कि हर संवेदनशील नागरिक का है। स्त्रियों के प्रति दृष्टिकोण समाज के विकास की मंजिल के बारे में बहुत कुछ बता देता है। सामन्तवाद में अगर स्त्रियाँ गुलाम थीं तो पूँजीवाद ने उन्हें पूरी तरह बिकाऊ माल और भोग की वस्तु बना दिया है। हम इन दोनों ही स्थितियों को अस्वीकार करते हैं। इन समस्याओं का समाधान आमूल सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के साथ ही सम्भव है।

'दिशा' के सांस्कृतिक दस्ते ने 'आ गये यहाँ जवाँ कदम' और ' ऐ इंसानों ओस न चाटो' जैसे गीत प्रस्तुत किए। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में छात्रों ने हिस्सा लिया और प्रश्नोत्तर सत्र में वक्ता से कई महत्वपूर्ण प्रश्न पूछे। समय सीमा होने के कारण कई प्रश्न अनुत्तरित ही रह गये। लेकिन दिशा के अमित ने कहा कि संवाद यहीं खत्म नहीं होता। हम आगे भी इस तरह के व्याख्यानों और गोष्ठियों का आयोजन करेंगे और प्रश्नों के उत्तर मिलकर ढूँढेंगे।